UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186238

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 398.21 V314 Acc No. P.G.H 2761

Author : वर्मा शुभा

Title : यूक्रेन की लोक

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H 398.21 Y31Y   Accession No. PGH 2761

Author वर्मा उमा

Title यूक्रेन की लोक

This book should be returned on or before the c
last marked below.

(पहला भाग)

शुभा वर्मा

प्रकाशक

हिन्दी भवन

इलाहाबाद • जालन्धर

१९६१]

[मूल्य १·३०

प्रकाशक—
धर्मचन्द्र नारंग
हिन्दी-भवन
जालंधर शहर

मुद्रक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
कमल मुद्रणालय
३७० रानी मंडी
इलाहाबाद—३

प्यारे बच्चो !

अपनी दादी, नानी, माँ आदि से तुमने अनेक कहानियाँ सुनी होंगी और रोज़ सुनते होगे। उनमें तुम्हें क्या मिलता है ? एक सीख : सच्चाई, ईमानदारी और मेहनत की हमेशा जीत होती है तथा झूठ, बेइमानी और पशुता की हार।

यूक्रेन रूस का एक प्रान्त है। इस किताब की कहानियाँ वहीं की हैं। सचमुच, बड़ी दिलचस्प कहानियाँ हैं। इन कहानियों के पात्र हैं मुर्गा, लोमड़ी, खरगोश, भेड़िया आदि जानवर; लेकिन इनमें वे सब गुण-अवगुण मौजूद हैं जो आदमियों में होते हैं और वही सीख तुम्हें इनमें भी दिखाई पड़ेगी।

—लेखिका

सूची

१. घोड़े का शिकार	१
२. निब्ली किब्ली	७
३. पूसा और पुकी	१६
४. श्रीमान् म्याऊँ	२४
५. बूढ़े आदमी का दस्ताना	३१
६. भूसे का बछड़ा	३४

घोड़े का शिकार

बड़े पुराने समय की बात है। एक किसान ने एक कुत्ता पाला था। जब तक कुत्ता जवान था अपने मालिक के घर की रखवाली करता रहा, किन्तु जब वह बूढ़ा हो गया तो उसके मालिक ने उसे निकाल दिया। कुत्ता इधर-उधर भटकता हुआ एक चरागाह तक गया और छोटे-छोटे जानवरों तथा चूहों को मार कर अपना पेट भरने लगा।

एक दिन एक भेड़िया उसके पास आया और बोला : "कहो दोस्त! कैसे रहे?"

कुत्ते ने बड़ी नम्रता से अपने बारे में बताया कि कितनी कठिनाई से वह अपना पेट पाल रहा है। भेड़िये ने फिर पूछा : "तो फिर अब जाओगे कहाँ?"

कुत्ते ने अपनी पूरी स्थिति समझाई : "जब मैं जवान था मेरा मालिक मेरे साथ बड़ा अच्छा व्यवहार करता था, क्योंकि मैं उसके घर की रखवाली करता था; किन्तु जब मैं बूढ़ा हो गया तो उसने मुझे घर से निकाल दिया। और अब मैं इधर-उधर भटक रहा हूँ।"

"तब तो तुम जरूर भूखे होगे?" भेड़िये ने सहानुभूति दिखाई।

"हाँ दोस्त, मैं बहुत भूखा हूँ।" कुत्ते ने जवाब दिया।

"अच्छा, मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा।"

और कुत्ता भेड़िये के साथ चल पड़ा। वे चरागाह के बीच से गुज़र रहे थे। चलते-चलते भेड़िये की निगाह भेड़ों के एक झुंड पर पड़ी। उसने कुत्ते से कहा : "जाओ, और देखो वे कौन से जानवर घास चर रहे हैं?"

"भेड़ों का एक झुंड है।" कुत्ता बोला।

"जहन्नुम में जायें वे। उन्हें यदि हम खाने की कोशिश करेंगे तो हमारे सारे दाँत ऊन में ही फँस जायेंगे और पेट खाली का खाली रह जायेगा। चलो और आगे चलें।"

वे और आगे बढ़े। कुछ दूर जाने पर भेड़िये ने बत्तखों का एक झुंड देखा।

"दोस्त! जा कर देखो तो, वे कौन से जानवर चर रहे हैं?" उसने कुत्ते से कहा।

कुत्ता गया और देख कर फौरन वापस आया।

"बत्तखें हैं।" उसने कहा।

"जहन्नुम में जायें वे। यदि हम उन्हें खाने की कोशिश करेंगे तो हमारे दाँतों में तमाम डैने फँस कर रह जायेंगे और हमारा पेट खाली का खाली रह जायेगा। और आगे चलो।"

और वे चलते गये। अबकी भेड़िये ने एक घोड़ा देखा जो घास चर रहा था।

"जाओ, और देखो वह कौन जानवर है?"

कुत्ता दौड़ता हुआ गया और वापस आ कर बोला :

"एक घोड़ा है।"

"ठीक, हम लोग इसे खा सकते हैं।"

और घोड़े का शिकार करना ही निश्चित हुआ। वे दोनों उसके नज़दीक पहुँचे। भेड़िया पृथ्वी पर पंजा पटक-पटक और दाँत कटकटा कर अपने को क्रोधित करने लगा। कुछ देर इसी प्रकार से करने के बाद वह कुत्ते से बोला :

"देखो दोस्त, क्या मेरी दुम फुरफुरा रही है?"

कुत्ते ने देखा, सचमुच उसकी दुम फुरफुरा रही थी।

भेड़िया फिर बोला : "क्या मेरी आँखें क्रोध से लाल हो गई हैं?"

"हाँ, वे बिलकुल अंगारे जैसी लग रही हैं।"

भेड़िया उछल कर घोड़े की गरदन पर चढ़ बैठा। उसने घोड़े की गरदन के बालों को पकड़ कर उसे जमीन पर पटक दिया फिर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तब दोनों मिल कर उसे खाने लगे। भेड़िया जवान था। उसने जल्दी-जल्दी खा कर अपना पेट भर लिया। किन्तु कुत्ता बूढ़ा था। वह बेचारा जब तक हड्डियाँ चिचोड़ता रहा तब तक दूसरे कुत्ते आये और छीन झपट कर खा गये। वह भूखा का भूखा ही रह गया।

भेड़िया तो चलता बना। कुत्ता सड़क के किनारे बैठ गया। उसने देखा, एक बिल्ला जो उसी की तरह बूढ़ा हो चला है चूहों की तलाश में इधर-उधर भटकता उसी की ओर चला आ रहा है।

"कहो भाई, कहाँ जा रहे हो?" कुत्ते ने पूछा।

"जहाँ तक यह सड़क मुझे ले जाय। क्या बताऊँ भाई, जब मैं जवान था तो मालिक मेरा पालन-पोषण करता था क्योंकि मैं उसके घर के चूहों को पकड़-पकड़ कर खा जाता था, किन्तु जब मैं बूढ़ा हो गया और मेरी शक्ति क्षीण हो गई, उसने मुझे खाना-पीना देना बन्द कर दिया, यहाँ तक कि घर से भी निकाल दिया। अब मैं दुनिया के दरवाजे खटखटा रहा हूँ।"

"अच्छा भाई, तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें खाना खिलाऊँगा।" और कुत्ते ने निश्चय कर लिया कि जिस तरह भेड़िये ने शिकार किया था, वह भी करेगा।

बिल्ले को साथ ले कर वह आगे बढ़ा।

चलते-चलते उन्हें भेड़ों का एक झुंड दिखाई पड़ा जो चरागाह में घास चर रहा था।

कुत्ते ने कहा : "भाई पूसे, जा कर देखो, वे सामने कौन से जानवर चर रहे हैं?"

बिल्ला गया और वापस आ कर बोला :

"भेड़ों का एक झुंड है।"

"जहन्नुम में जायें वे ! यदि हम उन्हें खाने की कोशिश करेंगे तो हमारे सारे दाँत केवल ऊन से ही भर जायेंगे। पेट खाली का खाली रह जायेगा। चलो, और आगे चलें।"

वे और आगे बढ़े। कुछ दूर जाने पर कुत्ते ने बत्तखों का झुंड देखा।

"भाई पूसे, जा कर देखो तो वे कौन से जानवर हैं ?"

बिल्ला गया और देख कर फौरन वापस आया।

"बत्तखें हैं।"

"जहन्नुम में जायें वे। यदि हम उन्हें खाने की कोशिश करेंगे तो हमारे दाँतों में डैने ही डैने फँस कर रह जायेंगे और हमारा पेट खाली का खाली रह जायेगा। और आगे चलो।"

और वे चलते गये। अब की कुत्ते ने एक घोड़ा देखा जो घास चर रहा था।

"पूसे भैया, दौड़ कर जाओ और देखो वह कौन जानवर घास चर रहा है ?"

बिल्ला गया और वापस आ कर बोला :

"एक घोड़ा है।"

"ठीक, हमलोग इसे खा सकते हैं। आओ, इसी का शिकार किया जाय।"

वे दोनों घोड़े के नज़दीक पहुँचे। कुत्ता ज़मीन पर पंजा पटक-पटक कर और दाँत कटकटा-कटकटा कर अपने को क्रोधित करने की कोशिश करने लगा। फिर बोला :

"देखो भाई, क्या मेरी दुम फुरफुरा रही है ?"

"नहीं तो···।"

कुत्ते ने फिर पंजा मारना शुरू किया।

"अब देखो पूसे भाई, और कहो कि मेरी दुम फुरफुरा रही है।"

"बहुत अच्छा, मैं तुम्हारी आज्ञा अवश्य मानूँगा।"

"हाँ, अभी हम लोग थोड़ी देर में घोड़े को मार कर प्रेमपूर्वक खायेंगे।"

और वह लगातार धरती पर अपना पंजा मारता रहा।

"हाँ, पूसे भाई, देखो तो, क्या मेरी आँखें क्रोध से अंगारे की तरह लाल हो गई हैं ?"

"नहीं तो···।"

"तुम झूठ बोलते हो। कहो कि हाँ, हो गई हैं।"

"बहुत अच्छा। जब तुम कह रहे हो तो लो मैं भी कहे दे रहा हूँ कि हाँ, वे अंगारे की तरह लाल हो गई हैं।"

तब कुत्ता क्रोधित हो कर घोड़े पर झपटा। लेकिन घोड़े ने एक ही दुलत्ती में उसे गिरा दिया। कुत्ते के सिर में गहरी चोट आ गई। वह ज़मीन पर गिर पड़ा और उसकी आँखें निकल आईं। बिल्ला दौड़ कर उसके पास आया और बोला :

"अहा मेरे भाई, अब तुम्हारी आँखें बिलकुल अंगारे जैसी लग रही हैं !"

निब्ली किब्ली

पुराने ज़माने की बात है। एक बूढ़ा आदमी अपनी बुढ़िया के साथ रहता था। एक दिन बूढ़ा एक मेले में गया। वहाँ उसने एक बकरी खरीदी। शाम को वह मेले से वापस आया और थकावट के कारण सो गया। दूसरे दिन सुबह उसने अपने बड़े लड़के को बकरी के साथ चरागाह की ओर भेज दिया। लड़का दिन भर उसे चराता रहा। शाम को उसने बकरी को घर की ओर हाँका। जब वह दरवाज़े तक आया तो उसने देखा कि उसका पिता अपना लाल जूता पहने हुए खड़ा था। बूढ़े ने बकरी से पूछा :

"नन्ही बकरी, दिन भर चरने से तुम्हारा पेट तो भर गया न ?"

बकरी ने उत्तर दिया : "नहीं बाबा, दिन भर मुझे कुछ भी खाने को नहीं मिला :

गई दौड़ती हुई भूख से एक पेड़ के पास,
पत्ती एक तोड़ ली मैंने, नहीं मिली थी घास।
भरसक उसे चबा कर नाले तक पहुँची मैं कूद,
पानी पीना चाहा लेकिन मिला एक ही बूँद।

और यही मेरा दिन भर का खाना-पीना था।"

बूढ़ा अपने लड़के पर बहुत नाराज़ हुआ और उसे घर से निकाल दिया।

दूसरे दिन उसने अपने छोटे लड़के को बकरी के साथ भेजा। दिन भर वह उसे चराता रहा और शाम को घर की ओर हाँक ले चला। जब वह दरवाज़े तक पहुँचा तो वहाँ बूढ़ा आदमी अपना लाल जूता पहने हुए खड़ा मिला। उसने बकरी से पूछा :

"नन्ही बकरी, आज तो तुम्हारा पेट भरा है न ?"

"नहीं बाबा, न तो मुझे कुछ खाने को ही मिला और न पीने को ही ;

गई दौड़ती हुई भूख से एक पेड़ के पास ,
पत्ती एक तोड़ ली मैंने, नहीं मिली थी घास ।
भरसक उसे चबा कर नाले तक पहुँची मैं कूद ,
पानी पीना चाहा लेकिन मिला एक ही बूँद ।

और यही मुझे दिन भर में खाने-पीने को मिला ।"

बूढ़े ने अपने छोटे लड़के को भी घर से निकाल दिया। तीसरे दिन उसने बुढ़िया को बकरी के साथ भेजा। वह बकरी को ले कर चरागाह की ओर गई। दिन भर चराने के बाद शाम को घर लौटी। दरवाजे पर फिर बूढ़ा मिला। उसके पैरों में वे ही लाल जूते थे। उसने आज भी पूछा :

"नन्ही बकरी, आज तुम्हें भरपूर खाने को मिला कि नहीं ?"

"नहीं बाबा, मैंने आज भी कुछ नहीं खाया-पिया ;

गई दौड़ती हुई भूख से एक पेड़ के पास ,
पत्ती एक तोड़ ली मैंने, नहीं मिली थी घास ।
भरसक उसे चबा कर नाले तक पहुँची मैं कूद ,
पानी पीना चाहा लेकिन मिला एक ही बूँद ।

और यही मेरा दिन भर का खाना और पीना था ।"

बूढ़े ने बुढ़िया को भी घर से निकाल दिया।

चौथे दिन वह बकरी को स्वयं चराने के लिए ले गया। वह पूरे दिन उसे चराता रहा। जब शाम हुई तो उसने बकरी को घर की ओर हाँक दिया और स्वयं दूसरे रास्ते से दौड़ कर दरवाजे पर पहुँच गया। उसके पैरों में वे ही लाल जूते थे।

"नन्ही बकरी, आज तो तुम्हें पूरा खाने-पीने को मिला है ?" उसने आज भी पूछा।

बकरी ने नित्य की ही भाँति उत्तर दिया : "नहीं बाबा, मैंने दिन भर आज भी कुछ नहीं खाया ;

गई दौड़ती हुई भूख से एक पेड़ के पास ,
पत्ती एक तोड़ ली मैंने, नहीं मिली थी घास ।
भरसक उसे चबा कर नाले तक पहुँची मैं कूद ,
पानी पीना चाहा लेकिन मिला एक ही बूँद ।

और यही मेरा दिन भर का भोजन था ।"

बूढ़े को बड़ा क्रोध आया । वह एक लुहार के पास गया और उसने अपने छुरे पर सान धरवाई । उसने सोचा आज इस पेटू बकरी को मार डालूँगा । किन्तु तभी बकरी रस्सा तुड़ा कर जंगल की ओर भाग चली । भागते-भागते वह एक खरगोश की झोपड़ी में घुस गई और चूल्हे के ऊपर छिप कर बैठ गई ।

कुछ देर बाद खरगोश आया । उसने देखा कि झोपड़ी में कोई बैठा है तो चौंक पड़ा ।

"मेरी झोपड़ी में कौन बैठा है ?" उसने बड़ी हिम्मत कर के पूछा ।

बकरी ने बैठे-बैठे ही उत्तर दिया :

"मैं हूँ नन्ही मुन्नी बकरी
निब्ली किब्ली मेरा नाम ;
मेले से आई खरीद कर
कुछ रुपये ही मेरा दाम ।
एक बार 'में···में···' कर दूँगी
भागोगे सीधे चुपचाप ;
या रौंदूँगी पैरों से, टें···
हो जाओगे आप जनाब ।
मेरे सींग देखते हो क्या
ले लूँगी मैं इनसे जान ,

चीर-फाड़ कर रख दूँगी मैं
हो जायेगा काम तमाम।"

खरगोश डर के मारे जान ले कर भागा और एक पेड़ के नीचे बैठ कर रोने लगा। अचानक एक भालू झूमता-झामता उधर से निकला।

"क्यों रोते हो बच्चे ?" उसने खरगोश से पूछा।

"क्या करूँ बाबा, मेरी झोपड़ी में एक बड़ा भयंकर जानवर घुसा बैठा है।"

"डरो नहीं, मैं अभी जा कर उसे बाहर निकाल देता हूँ।" और भालू खरगोश की झोपड़ी तक पहुँचा।

"झोपड़ी में कौन बैठा है ?" उसने पुकारा।

बकरी ने जवाब दिया :

"मैं हूँ नन्ही मुन्नी बकरी
निब्ली किब्ली मेरा नाम,
मेले से आई खरीद कर
कुछ रुपये ही मेरा दाम।
एक बार 'में···में···' कर दूँगी
भागोगे सीधे चुपचाप
या रौंदूँगी पैरों से टें···
हो जाओगे आप जनाब।
मेरे सींग देखते हो क्या ?
ले लूँगी मैं इनसे जान,
चीर-फाड़ कर रख दूँगी मैं
हो जायेगा काम तमाम।"

भालू बहुत डरा। वह भागता हुआ खरगोश के पास पहुँचा और बोला :

"ना बाबा, मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता। मैं तो स्वयं ही उससे बहुत डर गया हूँ।"

खरगोश फिर रोने लगा। वह बड़ी देर तक रोता रहा। तभी उधर से एक भेड़िया निकला। खरगोश को रोते देख कर उसने पूछा :

"क्यों रोते हो, भाई ?"

"क्या करूँ ? कोई भी मेरी मदद करने वाला नहीं है। एक भयंकर जानवर मेरी झोपड़ी में घुस कर बैठा है।" रोते-रोते खरगोश ने कहा।

"अच्छा, तुम रोओ नहीं। मैं अभी जा कर उसे निकाल बाहर करता हूँ।"

"तुम उसे नहीं निकाल सकते, भैया। भालू भी ऐसा ही कह कर गया था, किन्तु उसे देखते ही भाग खड़ा हुआ। तुम भी उसे नहीं निकाल पाओगे।"

"तुम इसकी चिन्ता न करो। मैं तुम्हारी हर तरह से मदद करूँगा।" और वह दौड़ता हुआ खरगोश की झोपड़ी तक गया।

"झोपड़ी में कौन है ?" उसने ज़ोर से कहा।

बकरी ने जवाब दिया :

"मैं हूँ नन्ही मुन्नी बकरी
निब्ली किब्ली मेरा नाम,
मेले से आई खरीद कर
कुछ रुपये ही मेरा दाम।
एक बार 'में···में···' कर दूँगी
भागोगे सीधे चुपचाप,
या रौंदूँगी पैरों से, टें···
हो जाओगे आप जनाब।
मेरे सींग देखते हो क्या ?
ले लूँगी मैं इनसे जान
चीर-फाड़ कर रख दूँगी मैं
हो जायेगा काम तमाम।"

डर के मारे भेड़िये का बुरा हाल हो गया। वह सर पर पैर रख कर भागा

और आ कर खरगोश से बोला :

"बाप रे बाप ! कितना भयंकर जानवर है ! मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकता, भाई ! मुझे माफ करो।"

खरगोश फिर रोने लगा।

अबकी एक लोमड़ी आई। उसने खरगोश से रोने का कारण पूछा।

खरगोश बोला : "लोमड़ी बहन, मेरी झोपड़ी में एक बड़ा भयंकर जानवर घुस कर बैठा है। अब तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ ?"

"रोओ नहीं, भाई ! मैं उसे झोपड़ी से अभी निकालती हूँ।"

"नहीं बहन, तुम उसे नहीं निकाल सकतीं। वह बड़ा भयंकर जानवर है। तुम कैसे उसे निकाल सकोगी ?"

"तुम इसकी चिन्ता मत करो। तुम्हारी रक्षा का भार मेरे ऊपर है। मैं उसे अवश्य बाहर निकालूँगी।"

और वह झोपड़ी तक पहुँची। उसने आवाज दी :

"झोपड़ी में कौन है ?"

उत्तर मिला :

"मैं हूँ नन्ही मुन्नी बकरी
निब्ली किब्ली मेरा नाम,
मेले से आई खरीद कर
कुछ रुपये ही मेरा दाम।
एक बार 'में···में···' कर दूँगी
भागोगे सीधे चुपचाप
या रौंदूँगी पैरों से टें···
हो जाओगे आप जनाब।
मेरे सींग देखते हो क्या
ले लूँगी मैं इनसे जान

चीर-फाड़ कर रख दूँगी मैं
हो जायेगा काम तमाम।"

सुनते ही लोमड़ी डर कर भागी। डर के मारे उसका बुरा हाल था। हाँफते-हाँफते वह खरगोश के पास पहुँची :

"भाई खरगोश ! मैं तुम्हारी कोई मदद नहीं कर सकती। इतने भयंकर जानवर का मुकाबला करना मेरे बूते के बाहर है।"

खरगोश बेचारा फिर अपने भाग्य को रोने बैठ गया। रोने के सिवाय उसके पास चारा भी क्या था ?

उसका रोना सुन कर एक केकड़ा आया। उसने खरगोश से पूछा :

"क्या बात है, भाई ! इतना रोना-धोना क्यों मचा रखा है ?"

खरगोश ने अपना दुखड़ा सविस्तार सुना दिया। सब कुछ सुन कर केकड़े ने उसे सान्त्वना दी और उसकी रक्षा का वचन भी दिया। किन्तु खरगोश को इससे कोई तसल्ली नहीं हुई। उसने उसी चिन्तित स्वर में कहा :

"केकड़े भाई ! तुम किसी तरह भी उसे बाहर नहीं निकाल सकते। वह बड़ा भयंकर जानवर है। भालू भेड़िया और लोमड़ी, सभी उससे डर कर अपनी जान बचा कर भाग चुके हैं।"

"ठीक है। तुम देखते जाना, मैं क्या करता हूँ ?" और केकड़ा रेंगता हुआ झोपड़ी तक पहुँचा और बोला : "अन्दर कौन है ?"

सबकी भाँति उसे भी उत्तर मिला :

"मैं हूँ नन्ही मुन्नी बकरी
निब्ली किब्ली मेरा नाम,
मेले से आई खरीद कर
कुछ रुपये ही मेरा दाम।
एक बार 'में···में···' कर दूँगी
भागोगे सीधे चुपचाप,

या रौंदूँगी पैरों से, टें···
हो जाओगे आप जनाब।
मेरे सींग देखते हो क्या?
ले लूँगी मैं इनसे जान,
चीर-फाड़ कर रख दूँगी मैं
हो जायेगा काम तमाम।"

किन्तु केकड़ा डरा नहीं। वह रेंगता हुआ बकरी के पास पहुँचा और अपने पंजों से उसे खखेटता हुआ बोला :

"नन्ही मुन्नी बकरी रानी,
राजा हूँ मैं पानी का;
ठहरो मजा चखाता हूँ मैं,
तुमको इस मनमानी का।
नोच-नोच कर खाऊँगा जब,
तड़प - तड़प रह जाओगी;
बात न मुँह से निकल सकेगी,
रोओगी पछताओगी।"

और वह बराबर अपने पंजों से बकरी को नोचने लगा।

बकरी एक ही छलाँग में चूल्हे से कूद कर नीचे आ गई और अपनी जान ले कर भागी। उसने एक बार भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

खरगोश बहुत खुश हुआ। उसने केकड़े को लाखों धन्यवाद दिये और खुशी-खुशी अपनी झोपड़ी में आया। तब से वह आराम के साथ अपनी झोपड़ी में रहने लगा।

●

पूसा और पुकी

पुराने समय की बात है। एक बिल्ला और एक मुर्गा एक ही साथ रहा करते थे। बिल्ले का नाम था पूसा और मुर्गे का पकपक। पूसा पकपक को प्यार से पुकी कहा करता था। वे दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते और मिलजुल कर अपनी छोटी सी झोपड़ी में रहा कहते। पुकी अभी छोटा था इसलिए बाहर का सारा काम पूसे को ही करना पड़ता था।

एक दिन पूसा जब जंगल में लकड़ी काटने जाने लगा तो पुकी से बोला :

"देखो पुकी, मैं जंगल में लकड़ी काटने जा रहा हूँ। तुम चूल्हे के पास बैठे रहना और अपना कैलेरोज (एक प्रकार का यूक्रेनी खाना) खा लेना। किसी को झोपड़ी में आने मत देना और न तुम्हीं बाहर जाना। कोई बुलाये तो भी न बोलना।"

"बहुत अच्छा," पुकी ने जवाब दिया और जब पूसा चला गया तो दरवाजा बन्द कर लिया।

इतने ही में एक लोमड़ी आई। उसने सोचा कि पुकी घर में अकेला ही होगा। उसके मुँह में पानी भर आया। वह झोपड़ी के पास गई और गाने लगी :

"नन्हे मुर्गे बाहर आओ
चाभी ले कर ताला खोलो।
दूँगी मैं गेहूँ के दाने
मीठे - मीठे बड़े सयाने।
अगर न आओगे तुम बाहर
मैं ही आ जाऊँगी भीतर।

खिड़की तोड़ पकड़ लाऊँगी
घर ले जा कर खा जाऊँगी।"

पुकी ने जवाब दिया :

"कुकड़ू कूँ, कुकड़ू कूँ···
पूसा कहता बैठे रहना।
नहीं किसी से कुछ भी कहना।"

लोमड़ी ने खिड़की तोड़ दी और पुकी को अपने दाँतों में दबा कर भाग चली। पुकी चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगा :

"पूसा भैया मुझे बचाओ!
दुष्ट लोमड़ी लिये जा रही
इसके मुँह से मुझे छुड़ाओ।
छूट रहा घर, जंगल—कोई
भैया से जा अभी बताओ।
हाय, मरा जाता मैं भैया
दौड़ो, मेरी जान बचाओ।"

पूसे ने पुकी की चीख सुनी तो दौड़ता हुआ आया। उसने पुकी को लोमड़ी के मुँह से छीन लिया और घर लिवा लाया। फिर वह लकड़ी काटने जाने लगा तो बोला :

"अब अगर लोमड़ी आये तो हरगिज़ न बोलना। अब की मैं बहुत दूर जाऊँगा। वहाँ तक मैं तुम्हारी आवाज़ न सुन सकूँगा। इसलिए तुम चुपचाप बैठे रहना।"

इस प्रकार समझा-बुझा कर पूसा चला गया।

ज्योंही लोमड़ी ने देखा कि पूसा गया वह दौड़ती हुई आई और खिड़की के पास जा कर खटखटाती हुई बड़ी मीठी आवाज में बोली :

"नन्हें मुर्गे बाहर आओ
चाभी ले कर ताला खोलो,

दूँगी मैं गेहूँ के दाने
मीठे मीठे बड़े सयाने।
अगर न आओगे तुम बाहर
मैं ही आ जाऊँगी भीतर,
खिड़की तोड़ पकड़ लाऊँगी
घर ले जा कर खा जाऊँगी।"

पुकी बिना उत्तर दिये न रह सका। वह बोल पड़ा :

"पूसा कहता बैठे रहना
नहीं किसी से कुछ भी कहना।"

लोमड़ी ने खिड़की तोड़ दी और अन्दर घुस गई। वहाँ पर खाने के लिए जो चीज़ें रखी थीं सब खा गई। फिर पुकी की गरदन पकड़ी और चलती बनी। पुकी आर्त्त स्वर में पुकार-पुकार कर रोने लगा :

"पूसा भैया मुझे बचाओ!
दुष्ट लोमड़ी लिये जा रही
इसके मुँह से मुझे छुड़ाओ।
छूट रहा घर, जंगल—कोई
भैया से जा अभी बताओ।
हाय, मरा जाता मैं भैया
दौड़ो, मेरी जान बचाओ।"

किन्तु उसकी आवाज़ पूसा न सुन सका। तब वह और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा। पूसे के कान में उसके चिल्लाने की भनक पड़ी। वह दौड़ता हुआ आया और लोमड़ी से छुड़ा कर पुकी को घर ले गया।

अब की जंगल में जाते समय उसने कड़ी ताकीद की :

"देख पुकी, अब की मैं बहुत दूर जाऊँगा। तुम कितनी ही तेज़ आवाज़ में पुकारो मैं नहीं सुन सकूँगा। इसलिए तुम चुपचाप चूल्हे के पास बैठे रहना

और जब भूख लगे अपना खाना खा लेना। जब लोमड़ी आ कर तुम्हें पुकारे तो कोई उत्तर न देना।"

और पूसा फिर चला गया। उसके जाते ही लोमड़ी आई और पुकारने लगी :

"नन्हें मुर्गे बाहर आओ
चाभी ले कर ताला खोलो।
दूँगी मैं गेहूँ के दाने
मीठे मीठे बड़े सयाने।
अगर न आओगे तुम बाहर
मैं ही आ जाऊँगी भीतर।
खिड़की तोड़ पकड़ लाऊँगी
घर ले जा कर खा जाऊँगी।"

अब की बार भी पुकी चुप न रह सका :

"पूसा कहता बैठे रहना,
नहीं किसी से कुछ भी कहना।
अतः न कुछ भी बोल सकूँगा,
द्वार न अपना खोल सकूँगा।"

लोमड़ी खिड़की से कूद कर फिर अन्दर पहुँची। खाना जो तैयार करके रखा था चट कर गई और पुकी को पकड़ कर घर की ओर भागी।

पुकी चीख-चीख कर पूसे को पुकारता रहा किन्तु वह बहुत दूर निकल गया था इसलिए उसकी आवाज़ न सुन सका। लोमड़ी पुकी को अपनी झोपड़ी में ले गई। उसने सोचा कि मेरे बच्चे भोजन के समय शाम को इसे खा कर बड़े प्रसन्न होंगे। उसने पुकी को एक तरफ डाल दिया।

शाम को जब पूसा लौटा तो उसने देखा कि पुकी झोपड़ी में नहीं है। वह समझ गया कि यह काम लोमड़ी का ही है और वह अपने प्यारे पुकी को वापस

लाने की तरकीब सोचने लगा। कुछ ही क्षण पश्चात् वह उठा। उसने एक बाजा और एक बोरे का थैला लिया और लोमड़ी के घर की ओर चल पड़ा।

लोमड़ी शिकार की खोज में बाहर गई थी। झोपड़ी में उसके पाँच बच्चे—चार लड़कियाँ और एक छोटा लड़का—थे।

पूसा खिड़की के पास गया और अपना बाजा बजा-बजा कर बड़ी मीठी आवाज में गाने लगा :

"अहा, लोमड़ी का घर प्यारा
कैसा बढ़िया सब से न्यारा।
उसकी सुन्दर चार लड़कियाँ
कितनी प्यारी कितनी भोली;
नन्हा मुन्ना लड़का उसका
कितनी प्यारी उसकी बोली।
प्यारे बच्चो! बाहर आओ
गाना सुन लो, मौज उड़ाओ।"

लोमड़ी की बड़ी लड़की ने गाना सुना तो मुग्ध हो गई। उसने अपनी छोटी बहन से कहा :

"तुम यहीं रहो, मैं बाहर जा कर देखती हूँ कि कौन ऐसा बढ़िया गा रहा है?"

वह झोपड़ी के बाहर आई। पूसे ने बड़ी फुर्ती से उसकी नाक पर घूँसा जमाया—घम् घम्। और फिर उसे झोले में भर दिया।

उसने फिर अपना गाना शुरू किया :

"अहा लोमड़ी का घर प्यारा
कैसा बढ़िया सब से न्यारा।
उसकी सुन्दर चार लड़कियाँ
कितनी प्यारी कितनी भोली;

नन्हा मुन्ना लड़का उसका
कितनी प्यारी उसकी बोली।
प्यारे बच्चो! बाहर आओ
गाना सुन लो मौज उड़ाओ।"

अब लोमड़ी की दूसरी लड़की बाहर आई। पूसे ने झपट कर उसे भी दो घूँसे जमाये और उसे भी झोले में भर दिया।

फिर उसने अपना बाजा उठाया और गाने लगा :

"अहा, लोमड़ी का घर प्यारा
कैसा बढ़िया सबसे न्यारा।
उसकी सुन्दर चार लड़कियाँ
कितनी प्यारी कितनी भोली;
नन्हा मुन्ना लड़का उसका
कितनी प्यारी उसकी बोली।
प्यारे बच्चो! बाहर आओ
गाना सुन लो मौज उड़ाओ।"

अब की लोमड़ी की तीसरी लड़की बाहर आई। पूसे ने उसे भी घूँसा जमाया और फिर इसी प्रकार चौथी लड़की को भी दो घूँसे जमा कर उसने झोले में आराम करने के लिए डाल दिया। तब लोमड़ी का नन्हा मुन्ना बाहर आया। पूसे ने उसे भी झोले में डाल लिया।

और अब पूसे के झोले में लोमड़ी के पाँचों बच्चे पड़े हुए थे।

पूसे ने झोले का मुँह एक रस्सी से बाँध दिया और झोपड़ी में घुस पड़ा। उसने देखा पुकी एक बेंच पर पड़ा हुआ अन्तिम साँसें ले रहा है। उसके तमाम डैने नुचे हुए थे और एक पैर टूट गया था। पास ही चूल्हे पर एक बरतन में पानी खौल रहा था जिसमें पुकी को उबालना था।

पूसे ने पुकी की दुम पकड़ ली और कहा :

"पुकी भैया बाहर आओ
भागो, घर तक दौड़ लगाओ।"

पुकी हिला ; उसने चाहा कि एक बार 'कुकड़ू कूँ' कह कर वह खड़ा हो जाय, किन्तु बेचारे का एक पैर तो टूट चुका था। वह खड़ा कैसे होता ?

पूसे ने उसकी टूटी हुई टाँग ले कर गोंद से यथा-स्थान चिपका दी और उसके इधर-उधर बिखरे हुए पंखों को भी यथा-स्थान खोंस दिया।

तब दोनों ने मिल कर झोपड़ी में जितनी भी चीज़ें खाने के लिए तैयार थीं खा लीं और सारे बरतन भाँड़े तोड़-फोड़ डाले। फिर वे अपनी झोपड़ी में लौट आये।

तब से वे बड़ी शान्तिपूर्वक अपनी झोपड़ी में रहने लगे। इसके बाद पुकी ने कभी पूसे की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया, क्योंकि उसे अपने किये का फल मिल चुका था।

श्रीमान् म्याऊँ

बहुत दिन पहले की बात है। एक आदमी रहता था। उसके पास एक बिल्ला था जो इतना बूढ़ा हो गया था कि घर में इधर-उधर दौड़ते-फुदकते चूहे भी न पकड़ पाता था।

आदमी ने सोचा : "इस बूढ़े बिल्ले को पालने से क्या लाभ? चूहे मनमाना नुकसान करते रहते हैं और यह ताकता रहता है। बेहतर तो यही होगा कि इसे जंगल में छोड़ दूँ।"

और वह बिल्ले को जंगल में छोड़ आया।

बिल्ला एक सनोवर की छाँह में बैठ कर रोने लगा। तभी एक लोमड़ी अपनी सहज मुसकान बिखेरती हुई आ पहुँची।

"कौन हैं आप?" उसने बिल्ले से पूछा।

तत्काल ही सँभलते हुए बिल्ला बोला : "मैं हूँ श्रीमान् म्याऊँ।"

लोमड़ी ने बड़े सम्मान से बिल्ले की ओर देखा और सोचने लगी : कितने महान् जीव का दर्शन हुआ। उसने बड़ी नम्रता और आदर से कहा : "श्रीमान् म्याऊँ, क्या आप मुझसे शादी करेंगे? मैं एक योग्य पत्नी की तरह आपकी सेवा और देखभाल करके हर तरह से आपको प्रसन्न रखूँगी।"

"बहुत अच्छा, मुझे तुम्हारी बात मंजूर है।" श्रीमान् म्याऊँ बोले।

और लोमड़ी तथा बिल्ले की शादी हो गई। अब वे दोनों लोमड़ी के घर में आराम से रहने लगे।

लोमड़ी बिल्ले का बड़ा ख्याल रखती। जंगल से छोटे-छोटे मुर्गे और जानवर पकड़ कर लाती और उसे खिलाती। स्वयं भूखों रह लेती किन्तु

श्रीमान् म्याऊँ जो चाहते वह अवश्य पूरा करती।

एक दिन एक खरगोश लोमड़ी के पास आया और बोला : "लोमड़ी रानी! मैं तुम्हारे साथ शादी करना चाहता हूँ।"

खरगोश का नाम द्रुतगति था। लोमड़ी ने उत्तर दिया : "यह कैसे हो सकता है, द्रुतगति ? मेरी शादी तो हो चुकी है। यदि मेरे पति श्रीमान् म्याऊँ को इस बात का पता चला तो वे तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर डालेंगे।"

इतने ही में श्रीमान् म्याऊँ झोपड़ी से बाहर निकले। अपनी पीठ को धनुषाकार करते हुए उन्होंने अँगड़ाई ली और अपनी मूछों को एक झटका देते हुए गुर्राये।

खरगोश ने यह सब देखा तो वह फौरन भाग खड़ा हुआ। अगर थोड़ी सी भी देर वह और रुकता तो निश्चय ही बेहोश हो जाता। जंगल में जा कर उसने अपने दोस्त भेड़िये, भालू और सुअर से कहा : "मैंने एक बड़ा भयानक जानवर देखा है जिसका नाम श्रीमान् म्याऊँ है।"

चारों ने मिल कर सोचा कि हम लोगों का व्यवहार श्रीमान् म्याऊँ के साथ बहुत ही अच्छा होना चाहिए। इसके लिए उन्होंने निर्णय किया कि लोमड़ी-रानी को एक दावत दी जाय। और दावत में क्या-क्या चीजें खिलाई जायँ इस पर बात चली। भेड़िया बोला : H 398.21/V314 P.GH2761

"मैं दो-तीन प्रकार के गोश्त का प्रबन्ध कर दूँगा।"

"और मैं शलजम और आलू ले आऊँगा।" सुअर ने कहा।

"मैं बहुत बढ़िया शहद लाऊँगा।" भालू बोला।

खरगोश दौड़ कर गया और कुछ गोभी के फूल ले आया।

सब ने मिल कर खाना पकाया और मेज पर सजा कर रख दिया। लेकिन उनमें से कौन श्रीमान् म्याऊँ और लोमड़ी रानी को आमंत्रित करने जाय, इस बारे में कोई निश्चय न हो सका।

भालू ने कहा : "मैं इतना मोटा हूँ कि थोड़ी ही दूर जाने पर मेरी साँस

फूलने लगती है।"

"मुझसे कोई काम नहीं हो सकता और इतनी दूर जा कर उन्हें शीघ्र ही बुलाना है। भला मैं इसे कैसे कर सकता हूँ?" सुअर ने अपनी असमर्थता दिखाई।

"मैं तो अब बूढ़ा हो चला और सुनता भी कम हूँ।" भेड़िया भी राजी न हुआ।

अब खरगोश ही यह काम करने के लिए बचा। वह दौड़ता हुआ लोमड़ी के घर तक गया और खिड़की का दरवाजा खटखटाने लगा।

लोमड़ी कूद कर आई तो देखा खरगोश अपने पिछले पंजों पर बैठा था।

"क्या बात है, द्रुतगति?"

"लोमड़ी रानी, आज हमारी मित्र-मंडली आप लोगों को दावत में आमंत्रित कर रही है। इसीलिए मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।" खरगोश बोला।

लोमड़ी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया तो वह लौट पड़ा। और दौड़ता हुआ वहाँ पहुँचा जहाँ तीनों मित्र उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

भालू ने उसे देखते ही कहा : "तुमने उनसे यह तो कह दिया है न, कि आते समय वे अपना चम्मच अवश्य लायेंगे।"

"अरे बाप रे, यह तो मैं भूल ही गया।" और वह उलटे पैरों लोमड़ी के घर की ओर भागा। उसने खिड़की को खटखटाते हुए कहा : "जब आप लोग दावत खाने आइये तो कृपा कर अपना चम्मच भी अवश्य लेते आइये। पहली बार मैं यह कहना भूल गया था।"

लोमड़ी ने जवाब किया : "तुम इसकी चिन्ता न करो। हम लेते आएँगे।"

लोमड़ी अच्छे-अच्छे कपड़ों से सज-धज कर श्रीमान् म्याऊँ के साथ दावत खाने चल पड़ी।

श्रीमान् म्याऊँ खुशी से फूले नहीं समाते थे। वे अपनी मूछों को बार-बार झटका देते और "फुर्र फुर्र···" की आवाज करते हुए चल रहे थे। उनकी दोनों

आँखें हरी मोमबत्तियों की तरह चमक रही थीं।

श्रीमान् म्याऊँ को आता हुआ देख कर ही सभी जानवर भयभीत हो गये। भेड़िया एक झाड़ी में घुस गया, सुअर मेज के नीचे सरक गया, भालू एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और खरगोश अपने बिल में घुस गया। इस प्रकार चारों चार तरफ छिप गये। और शान के साथ श्रीमान् म्याऊँ अपनी पत्नी लोमड़ी रानी को ले कर मेज़ तक पधारे।

जब उन्होंने देखा कि कई तरह के गोश्त प्लेटों में सजा कर रखे गये हैं तो वे सहज मधुर वाणी "म्याऊँ, म्याऊँ, म्याऊँ·····" बिखेरते हुए उस पर झपटे और जितनी शीघ्रता से वे हड़प सकते थे हड़पना शुरू कर दिया।

श्रीमान् म्याऊँ का 'म्याऊँ म्याऊँ' सुन कर चारों जानवरों ने सोचा कि खाना शायद इनके लिए पूरा नहीं पड़ा। वे आपस में फुसफुसाये :

"कैसा पेटू है ? इतना खाना भी इसके लिए पूरा नहीं है !"

श्रीमान् म्याऊँ ने पेट भर कर खाया और शराब पी। फिर वे उसी मेज़ पर सिकुड़ कर बैठ गये और थोड़ी ही देर में ऊँघने लगे।

सुअर ने जो मेज़ के नीचे छिपा बैठा था हलके से अपनी दुम हिलाई।

श्रीमान् म्याऊँ ने सोचा—शायद कोई चूहा है जो मेज़ के नीचे उछल-कूद मचा रहा है। किन्तु जब उन्होंने सुअर को देखा तो डर के मारे कूद कर पेड़ पर चढ़ गये, जहाँ भालू बैठा था।

भालू ने सोचा कि श्रीमान् म्याऊँ उससे लड़ने के लिए चढ़े आ रहे हैं तो वह और ऊपर वाली शाखा पर चढ़ने लगा। किन्तु शाखा टूट गई और वह लुढ़कता हुआ नीचे आ गिरा जहाँ झाड़ी में भेड़िया छिपा बैठा था।

भेड़िये ने सोचा कि अब मेरा अन्त नज़दीक आ गया है। अतः वह सर पर पैर रख कर भागा। उसको भागता हुआ देख कर भालू भी भागा। वह इतनी तेजी से दौड़ रहा था कि खरगोश भी उससे पीछे रह गया।

श्रीमान् म्याऊँ फिर मेज़ पर आ डटे और सुअर का भुना हुआ नमकीन

गोश्त और शहद खाना शुरू किया। लोमड़ी रानी और श्रीमान् म्याऊँ ने वहाँ रखी हुई सारी चीज़ें साफ कर डालीं और अपने घर वापस आ गये।

कुछ देर बाद भालू, सुअर, भेड़िया और खरगोश साथ ही साथ वापस आये। वे आपस में कह रहे थे :

"श्रीमान् म्याऊँ कैसा भयंकर जानवर है? देखने में तो कितना छोटा है किन्तु वह हम चारों को खा सकता है।"

बूढ़े आदमी का दस्ताना

एक दिन एक बूढ़ा आदमी अपने कुत्ते के साथ जंगल से गुज़र रहा था। चलते-चलते अनजाने ही उसका दस्ताना कहीं गिर गया।

उसी समय एक चूहा फुदकता हुआ उधर से निकला। दस्ताने को पड़ा देख कर वह ठिठक गया और उसपर चढ़ते हुए बोला : "अहा, यह तो वही जगह है जिसे मैं इतने दिनों से ढूँढ रहा था। अब मैं यहाँ आराम से रह सकूँगा।" और वह दस्ताने में घुस गया।

कुछ देर बाद एक मेंढक उछलता हुआ आया और दस्ताने को देख कर बोला : "टर्र, टर्र, कौन हो भाई, जरा बाहर आओ?"

चूहे ने झाँक कर देखा और कहा : "मेरा नाम तो कुतरन है और तुम कौन हो?"

"मुझे लोग फुदकन कहते हैं। मैं अन्दर आऊँ?"

"हाँ, हाँ, आओ न।"

मेंढक उछल कर अन्दर जा पहुँचा। दोनों बड़ी प्रसन्नता से मिले।

इसके बाद ही एक खरगोश भी दौड़ता-उछलता वहीं पहुँचा। दस्ताने को देखा तो बोला : "कौन है इसके अन्दर?"

चूहे और मेंढक ने अपना-अपना परिचय दिया और पूछा : "तुम कौन हो?"

"मेरा नाम द्रुतगामी है। मुझे भी अपने साथ रखोगे?"

"क्यों नहीं। अन्दर आ जाओ।" दोनों बड़ी प्रसन्नता से बोले।

खरगोश कूद कर दस्ताने में जा पहुँचा। [illegible] की

संख्या दो से तीन हो गई।

कुछ समय बाद ही एक लोमड़ी घूमती-फिरती पहुँची और बोली : "किसका घर है भाई ! ज़रा बाहर आओ।"

चूहा, मेंढक और खरगोश तीनों ने झाँक कर देखा और अपना-अपना परिचय भी दिया।

लोमड़ी बोली : "तुम लोगों से मिल कर बड़ी खुशी हुई। मेरा नाम चंचलकुमारी है। मुझे भी अन्दर आने दो न ?"

चूहे, मेंढक और खरगोश ने बिना किसी आपत्ति के उसे भी भीतर बुला लिया।

कुछ समय बाद एक भेड़िया दबे पाँव रखता हुआ आया और उन लोगों को देख कर बोला : "कौन हो तुम लोग ?"

प्रत्येक ने अपना-अपना परिचय दिया। तब भेड़िया बोला : "तुम लोगों से मिल कर बड़ी खुशी हुई, दोस्तो। मेरा नाम 'दबे पाँव' है। तुम लोगों के साथ रहना मुझे बड़ा अच्छा लगेगा।" और वह भी दस्ताने में घुस गया।

इसके बाद ही एक जंगली सुअर आया। इन पंचनिवासियों को देख कर बोला : "कौन हो भाई, तुम्हारा घर तो बड़ा अच्छा है ?"

पाँचों ने अपने-अपने बारे में बताया और पूछा : "तुम कौन हो ?"

"मेरा नाम गुर्राऊदेव है। मुझे विश्वास है कि मेरे साथ रह कर तुम सब बड़े खुश होगे।"

"सो तो ठीक है, प्यारे दोस्त ! इस छोटे से घर में सभी तो रहना चाहते हैं किन्तु इतनी थोड़ी जगह में ज़्यादा लोगों का रहना आसान नहीं है। तुम भला कैसे रह सकोगे ?" वे बोले।

"कोई परवाह नहीं। थोड़ी जगह में भी मैं बड़ी प्रसन्नता से रह लूँगा।"

"तो फिर आ जाओ। किन्तु बाद में कोई शिकायत न करना।"

अब उस छोटे से दस्ताने में रहने वाले छह जानवर हो गये। वे आपस में

इतने ठसे हुए थे कि हिलने-डुलने की भी गुंजाइश न थी।

वे सब अपनी कशमकश में थे ही कि एक भालू वहाँ आ पहुँचा। इनका सम्मिलित कोलाहल सुनकर रुक गया और बोला :

"कौन हो तुम लोग ? यहाँ क्या कर रहे हो ?"

सब ने अपना-अपना परिचय दिया और कहा : "यह हम लोगों का घर है, किन्तु आप कौन हैं ?"

"मेरा नाम झबरू है। तुम लोगों के पास जगह की कमी तो जरूर है, दोस्त ! किन्तु मैं जानता हूँ कि मेरे लिए भी थोड़ी जगह अवश्य दोगे।"

"यह कैसे हो सकता है ? हम लोग तो खुद ही पिचे जा रहे हैं।"

"जहाँ चाह है वहीं राह भी है, दोस्त।"

"अच्छी बात है, आ जाइये; किन्तु याद रखिये कि आप अकेले ही नहीं हैं। सबके साथ आपको भी तकलीफ उठानी पड़ेगी।"

और भालू भी उसी में घुस गया। अब उसमें रहने वालों की संख्या कुल सात हो गई। दस्ताना बेचारा फटने-फटने को हो आया।

इसी समय बूढ़े का ध्यान अपने हाथ पर गया तो उसे पता चला कि उसका दस्ताना कहीं गिर गया है। कुत्ते को साथ लिये वह उसे ढूँढने को लौट पड़ा। काफी दूर चलने पर उसने देखा कि दस्ताना बरफ पर पड़ा है और इधर से उधर हिल डुल रहा है।

दौड़ कर कुत्ता वहाँ पहुँचा और भौंकने लगा। सारे दोस्त डर कर दस्ताने के अन्दर कसमसाये। वे कूद-कूद कर बाहर निकले और जितनी तेजी से भाग सकते थे प्राण ले कर जंगल की ओर भागे।

बूढ़ा आदमी पास आया। उसने अपना दस्ताना उठा कर पहन लिया।

और उसके दस्ताने की कहानी का यही अन्त है।

●

भूसे का बछड़ा

एक समय की बात है, एक बूढ़ा और एक बुढ़िया रहते थे। बूढ़ा शीरा बनाया करता और बुढ़िया घर की देख-भाल करती।

घर में काम ही कितना था। अक्सर वह बेकार रहती। अतः एक बार अपनी बेकारी से ऊब कर उसने बूढ़े से कहा : "मुझे एक भूसे का बछड़ा बना दो ?"

"क्या बकती हो ? तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया ? भला बछड़े का क्या करोगी ?"

"मैं उसे चराने ले जाऊँगी।"

बूढ़ा क्या करता ? उसने भूसे का बछड़ा बना दिया और उसकी पीठ तथा दोनों ओर बगल में शीरा पोत दिया। दूसरे दिन प्रातःकाल बुढ़िया बछड़े को ले कर चरागाह की ओर चली। साथ में उसने अपना चर्खा भी ले लिया।

एक पहाड़ी के पास बैठ कर उसने कताई शुरू की और बछड़े से कहा :

"घास चरो तुम हरी हरी, ओ भूसे के बछड़े
घास चरो तुम हरी हरी, ओ शीरे के बछड़े।"

फिर वह अपनी कताई में डूब गई। देर तक कातते-कातते उसकी आँखें झपकने लगीं।

अचानक घने जंगल से एक भालू दौड़ता हुआ आया। वह बछड़े की बगल में खड़ा हो कर बोला : "कौन हो तुम ?"

"मैं भूसे का बछड़ा हूँ। मेरी पीठ पर गाढ़ा शीरा लगा हुआ है।"

"मुझे भी थोड़ा सा शीरा दोगे ? क्योंकि शिकारी कुत्ते मुझे पंजे मार मार

कर परेशान करते हैं।"

बछड़ा कुछ न बोला। वह ज्यों का त्यों चुपचाप खड़ा रहा।

भालू को क्रोध आ गया। उसने अपना पंजा बढ़ा कर बछड़े की बगल में लगा शीरा निकाल लेना चाहा। किन्तु यह क्या? उसका पंजा बछड़े से बिलकुल चिपक ही गया!

इतने ही में बुढ़िया की आँख खुल गई। वह जोर से चिल्लाई: "दौड़ो, दौड़ो? मेरे बछड़े को भालू ने पकड़ लिया।"

बूढ़ा दौड़ता हुआ आया। उसने भालू को बछड़े से अलग किया और घर ले जा कर एक गहरे गढ़े में डाल दिया।

दूसरे दिन बुढ़िया फिर बछड़े को ले कर चरागाह की ओर चली। साथ में अपना चर्खा भी ले लिया।

एक पहाड़ी के किनारे बैठ कर वह बोली:

"घास चरो तुम हरी हरी, ओ भूसे के बछड़े
घास चरो तुम हरी हरी, ओ शीरे के बछड़े।"

फिर उसने अपनी कताई शुरू की। काफी देर कातते रहने के बाद वह ऊँघने लगी।

इतने में जंगल की ओर से एक भेड़िया दौड़ता हुआ आया।

उसने बछड़े को देखा और कहा:

"कौन हो तुम?"

"मैं भूसे का बछड़ा हूँ। मेरी पीठ पर शीरा लगा हुआ है।" बछड़े ने उत्तर दिया।

"मुझे थोड़ा सा शीरा दोगे? शिकारी कुत्ते मुझे पंजे मार मार कर बड़ा परेशान करते हैं।"

"ले लो।"

किन्तु ज्यों ही भेड़िये ने बछड़े की बगल से पंजा लगाया उसका पंजा

बुरी तरह चिपक गया।

बुढ़िया जाग पड़ी और चिल्लाई :

"दौड़ो, बचाओ ! मेरे बछड़े को भेड़िया पकड़े हुए है।"

बूढ़ा दौड़ता हुआ आया और भेड़िये को अलग करके ले जा कर उसी गढ़े में ढकेल दिया।

तीसरे दिन भी बुढ़िया बछड़े के साथ अपनी कताई ले कर चरागाह पहुँची। पहाड़ी के किनारे बैठ कर उसने कताई आरम्भ की और बछड़े से घास चरने को कह दिया।

नित्य की भाँति दौड़ती हुई एक लोमड़ी आई और बछड़े से बोली :

"कौन हो तुम ?"

बछड़े ने हमेशा की तरह उसे भी उत्तर दिया।

लोमड़ी ने भी उससे शीरा माँगा और बछड़े ने ले लेने को कह दिया।

शीरे के लिए हाथ बढ़ाते ही लोमड़ी बछड़े की पीठ से चिपक गई। बुढ़िया ने जाग कर फिर आवाज दी। बूढ़ा आया और लोमड़ी को भी उसने उसी गढ़े में ढकेल दिया।

अब उस गढ़े में तीन जानवर हो गये।

बूढ़ा एक चट्टान पर बैठ कर अपना छुरा तेज़ करते हुए बोला :

"भालू के चमड़े से मेरे लिए एक बड़ा सुन्दर कोट बन जायेगा।"

उसकी बात सुन कर भालू भयभीत हो गया और बोला :

"बूढ़े बाबा, मुझे मारो मत। यदि तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हारे लिए बढ़िया शहद ला दूँगा।"

"अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो ?"

"नहीं बाबा, मैं ऐसा नहीं करूँगा।"

"अच्छी बात है। जाओ, किन्तु यदि धोखा दिया तो ठीक न होगा।"

कहते हुए उसने भालू को छोड़ दिया और फिर अपना छुरा तेज़ करने

लगा। अबकी भेड़िये ने शंकित आँखों से देखते हुए पूछा :

"अब काहे को छुरा तेज़ कर रहे हो, बाबा ?"

"तुम्हें मारने के लिए। तुम्हारी खाल से जाड़े के लिए गरम टोपी बढ़िया बनेगी।"

"अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें भेड़ की एक सुन्दर खाल ला दूँगा।"

"अच्छा, लेकिन बेवकूफ बनाने की कोशिश मत करना।"

उसने भेड़िये को भी छोड़ दिया और फिर अपना काम करने लगा।

अब लोमड़ी के डरने की बारी थी। उसने पूछा :

"बाबा, भला अब इसे क्यों तेज कर रहे हो ?"

बूढ़ा बोला : "तुम्हारी खाल बड़ी मुलायम है। इससे मेरी बुढ़िया के कोट का कॉलर बड़ा सुन्दर बनेगा।"

"बाबा, अगर तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं तुम्हारे लिए मुर्गियाँ और बतखें ला दूँगी।" लोमड़ी ने प्रार्थना की।

"अच्छी बात है। तुम्हारी भी ईमानदारी देखनी है।"

और बूढ़े ने उसे भी छोड़ दिया।

प्रातःकाल पौ फटते ही दरवाजे पर किसी ने थाप दी।

बुढ़िया बोली : "कोई दरवाजा खटखटा रहा है, देखो तो, कौन है ?"

बूढ़े ने दरवाजा खोला। भालू शहद का बड़ा सा छत्ता लिये खड़ा था।

बूढ़े ने छत्ता ले कर दरवाजा बन्द कर लिया। तभी फिर खटखटाहट सुनाई पड़ी।

अब की भेड़िया था और उसके हाथ में भेड़ की एक सुन्दर खाल थी। उसके जाते ही लोमड़ी आई। उसके साथ कुछ मुर्गियाँ और बत्तखें थीं।

बूढ़ा और बढ़िया बहुत प्रसन्न हुए। उस दिन के बाद वे बहुत अच्छी तरह रहने लगे। दिन प्रतिदिन उनके धन की वृद्धि और स्वास्थ्य का सुधार होता गया।